भारत का उत्थान और पतन कैसे?

सीढ़ी का चित्र खास भारतवासियों के लिए है। आज से पाँच हजार वर्ष पहले भारत में आदि सनातन देवी-देवता धर्म था; परंतु मनुष्य बिल्कुल भूले हुए हैं। सब भारतवासी इस समय अपने मूल धर्म को, मूल कर्म को भूल चुके हैं, इसलिए अपन को हिन्दू कह देते हैं। वाइसलेस वर्ल्ड में एक धर्म था। वहाँ वाइसेस थे ही नहीं, कोई विकार था ही नहीं। इसलिए उसको निर्विकारी दुनिया कहा जाता है। वहाँ जो भी देवताएँ थे, वे सब अपन को देह नहीं समझते अपितु निराकार आत्मा समझते थे, तो निराकारी भी थे और निर्विकारी भी। फिर अहंकार की तो बात देवताओं में होती ही नहीं। आज से 5000 हजार वर्ष पहले ये भारत जब स्वर्ग था, स्व की स्थिति में सब टिके हुए थे, तो कितना हेल्दी–वेल्दी पवित्र था। कोई भी दवा आदि कराने की दरकार नहीं थी। इतने धनवान थे कि कोई भी धंधा आदि करने की दरकार नहीं थी, अथाह धन था।

परंतु आज भारत कंगाल बन गया है। एक भारत ही ऐसा देश है जहाँ सबसे जास्ती तादाद में अनेक धर्मों के लोग रहे पड़े हैं, और कोई ऐसा देश नहीं है। और जब अनेक धर्म के लोग इकट्ठे हुए पड़े हैं तो धर्म के आधार पर झगड़ा होगा ना! एक भारत ही ऐसा देश है, जहाँ अनेक जातियाँ हैं। इन जातियों को ले करके द्वेष और किसी देश में नहीं है। एक भारत ही ऐसा देश है जहाँ अनेक प्रॉविन्स हैं, अनेक राज्य हैं, इतना स्टेट के आधार पर झगड़ा और किसी देश में नहीं। भारत देश ऐसा है जहाँ अनेक भाषायें हैं। एक गाँव में दूसरी भाषा, दो किलोमीटर दूसरे गाँव में दूसरी भाषा और भाषा को ले करके खूब लड़ाई लड़ते हैं। भारत में अनेकों की भक्ति करते हैं। व्यभिचारी भक्ति से नीचे उतरते हैं। अनेकों में बुद्धि रमण करती है तो ज़रूर आत्मा का बहुत भारी पतन हो जाता है। दूसरे धर्म वाले अपने धर्म को जानते हैं, अपने कर्म को जानते हैं, धर्म पिता को जानते हैं, अपने धर्म खण्ड को जानते हैं। सिर्फ भारतवासी ही ऐसे हैं जो अपने धर्मपिता को जानते ही नहीं । जानते ही नहीं तो मानेंगे कैसे! भारत जैसा महान पवित्र खण्ड कोई होता ही नहीं और यही भारत खण्ड जब तामसी बनता है तो इन जैसा महान अपवित्र धर्म खण्ड कोई होता ही नहीं। जो जितना सतोप्रधान बनता है, उतना तामसी भी बनता है। तो जो भारत महान पावन था, सो भारत और भारतवासी महान पतित बने।

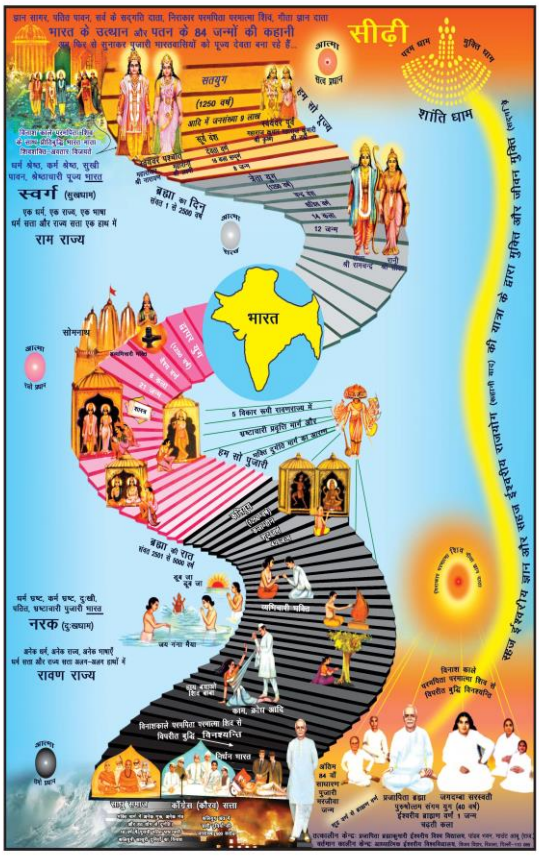

जब पतित बनते हैं तो भारत में ही ये याद करते रहते हैं- हे! पतित-पावन आओ! और देशों में याद नहीं करते। क्योंकि और-2 धर्म खण्ड वाले, और-2 देश इतने पतित, दुःखी होते ही नहीं, तो भारत में ही बुलाते हैं। दुःख के बंधन से तो हम सबको छुड़ाने वाला वह एक निराकार तुरिया आत्मा है, उसको हम कहते हैं 'शिव' और उस शिव की यादगार भारत में ही नहीं, दुनिया के दूसरे देशों में भी वह शिवलिंग मिल रहे हैं। गीता में लिखा हुआ है- "यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिः भवति"(4/7)। जब-2 धर्म की ग्लानि होती है और एक धर्म की नहीं, सभी धर्मों की ग्लानि होती है, सभी धर्म वाले आपस में लड़ाई लड़ते हैं, मारा-मारी करते हैं! तो ग्लानि हुई ना! तब भगवान आते हैं। भारत में ही महाशिवरात्रि मनाई जाती है, विदेशों में तो नहीं मनाते। भारत तो अविनाशी खण्ड है; क्योंकि अविनाशी भगवान का बर्थ प्लेस है। जो उत्तर भारत है खास करके यू.पी., वो भगवान की जन्म भूमि मानी जाती है जहाँ परमात्मा बाप प्रत्यक्षता रूपी जन्म लेते हैं। वह निराकार शिव जब इस संसार में आता है, तो जिसमें प्रवेश करता है, वह है सृष्टि का पहला पुरुष जिसे मुसलमान लोग आदम कहते हैं। आदम की औलाद आदमी, हम सब क्या हैं? आदम की औलाद हैं। क्रिश्चियन लोग उसको कहते हैं- एडम, जैनी लोग उसको कहते हैं-आदिनाथ, हिन्दुओं में कहा जाता है-आदिदेव। त्वं आदिदेवः पुरुषः पुराणः (गीता-11/38)। पुराने-ते-पुराना पुरुष वह आदिदेव/ आदि नारायण- जिनसे पहले कोई दूसरा नारायण होता ही नहीं । उन्हीं की यादगार में भारतवर्ष में, घर-2 में सत्य नारायण की कथा सुनाई जाती है। सत्य नारायण की जब कथा सुनाई जाती है तो साबित होता है कि सत्य नारायण ने झूठ से संघर्ष किया होगा। भारत में ही कहते हैं- सत्यम् शिवम् सुन्दरम्। सच्चा भगवान आते हैं तो उसको कहा जाता है सत्। सत् भगवान आकर राजयोग कि पढ़ाई पढ़ाकर कलियुग को बदलकर सतयुग की स्थापना करते हैं। इसलिए भारत का प्राचीन राजयोग बहुत मशहूर है। भारत अनेकों के संग के रंग से पतित बनता है और उस एक आदिदेव के संग के रंग में आने से ही भारत पावन बनता है। भारत माने- 'भा' माने रोशनी। 'रत' माने लगे रहना। जो ज्ञान की रोशनी मे रत रहे। अभी है भारत का पतन और सतयुग को कहा जाता है उत्थान। कैसे भारत का पतन होता है, कैसे उत्थान होता है इसलिए ये सीढ़ी में सारा समाचार है। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:- **आध्यात्मिक विश्वविद्यालय मो.-9891370007, Website- www.pbks.info, Youtube-AIVV**